AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

पश्चिम एशिया का भू–सामरिक महत्व

ORIGINAL ARTICLE

Authors
दीपा यादव
शोधार्थी
रक्षा एवं सामरिक अध्ययन विभाग
पी.जी. विभाग एवं अनुसंधान केंद्र
एस.एम.एस. सरकार

डॉ. गिरीश शर्मा
मार्गदर्शक
प्राध्यापक
सैन्यविज्ञान पी.जी.विभाग एवं अनुसंधान केंद्र सरकार
साइंस कॉलेज ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत

शोध सार

विश्व सैन्य इतिहास का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि जब से सेनाऐं अपने आधुनिकीकरण के चलते यंत्रीक्रंत और मशीनीक्रत हुई है तब से सेनाऐ इन मशीनों को चलाने हेतु उर्जा के प्रमुख स्त्रोत कच्चे तेल पर निर्भर हो गए है और यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण है कि समस्त विश्व का 90 प्रतिशत कच्चा तेल पश्चिम एशियाई क्षेत्र जिसे मध्य पूर्व या खाड़ी क्षेत्र के नाम से भी जाना जाता है, में पाया जाता है। परिणाम स्वरूप समस्त विश्व के लिए पश्चिम एशिया सर्वाधिक महत्वपूर्ण हो गया है। वर्तमान समय मे विश्व में प्रचलित तीनो प्रमुख धर्म ईसाई, मुस्लिम,हिन्दु धर्म का उद्भव केन्द्र होने के साथ–साथ यहुदी धर्म का जन्म स्थल होने के कारण समस्त विश्व की राजनीति को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। पश्चिम एशिया का महत्व बाईबल और कुरान दोनों के साथ–साथ विभिन्न हिन्दी साहित्य में भी मिला है। वस्तुतः पश्चिम एशिया, अफ्रीका और एशिया महाद्वीपों को जोड़ने वाले महत्वपूर्ण सेतु के भांति भी कार्य करता है। मौसम एवं जलवायु की विविधता भी यहां इतनी अधिक है कि जहां एक ओर सबसे अधिक गर्म इलाके तथा काफी हद तक ठन्डे क्षेत्र भी इसके अंर्तगत आते हैं।

मुख्य शब्द

पश्चिम एशिया, भू–सामरिकी, कालासागर, फारस की खाडी, मध्य पूर्व.

परिचय

मिस्त्र से लेकर ईराक तक का क्षेत्र पश्चिम एशिया क्षेत्र के रूप मे जाना जाता है। पश्चिम एशिया के प्रमुख शब्दों मे ईरान, ईराक, लीबिया, लेबनान, मिस्त्र, संयुक्त अरब अमीरात, ओमान, यमन, इजराइल, तुर्की, सिरिया, जोर्डन बेहारन, कतर, इजिप्त, कुवैत, इजराइल, तुर्की जैसे प्रमुख राष्ट्र है। पश्चिम एशिया का प्रमुख धर्म इस्लाम व यहुदी है।

स्वेज नहर के निर्माण के पूर्व अफ्रीका और एशिया की पश्चिम एशिया ही पृथक–पृथक करता था। पश्चिम एशिया का भू–भाग क्षेत्रफल की दृष्टि से 2.1 मिलयन वर्गमील में फैला हुआ है तथा जनसंख्या का घनत्व भी 34 व्यक्ति प्रति वर्गमील है!

पश्चिम एशिया क्षेत्र की सर्वप्रमुख विशेषता यह है कि इस सम्पूर्ण क्षेत्र में कच्चे तेल के भंडार स्थित है। जिसका दोहन और परिवहन करके यह राष्ट्रीय शक्ति को बढ़ाने हेतु समस्त निर्यात कर सकते है, किन्तु एशिया के

राष्ट्रो के रूझान अपने औद्योगिक एवं वैज्ञानिक विकास की ओर न होकर अंधाधुंध शस्त्रीकरण की ओर है। परिणाम स्वरूप ये राष्ट्र अपने स्वयं के विकास के लिए उन राष्ट्रो पर अधिक निर्भर है जिनसे ये शस्त्रास्त्रो का आयात कर रहे है, वही इसकी ओर शस्त्र उत्पादक एवं निर्यात करने वाले राष्ट्र खाड़ी देशो को सैन्य संसाधन एवं शस्त्रास्त्र देते तो रहे किन्तु इसके रख–रखाव एवं पूर्णतः उपयोग करने के लिए वैज्ञानिक एवं तकनीकी सहायता उपलब्ध नहीं कराते। परिणाम स्वरूप अधिकांशतः पश्चिम एशियाई राष्ट्र अपनी सुरक्षा के लिए अपने मित्र राष्ट्रो अन्य विदेशी राष्ट्रो पर निर्भर है।

पश्चिम एशिया की भौगोलिक स्थितियां भी इतनी अधिक असमान है कि पश्चिम एशियाई राष्ट्र टर्की का 80 प्रतिशत भाग और पर्शिया का 70 प्रतिशत भाग समुद्र तल से 3000 फीट की ऊचांई पर स्थित है तथा माइनर की चोटियां 10000 फीट से भी ऊँची है। जहां एक ओर भू–मध्य सागर के पास पाला तक भी नहीं पड़ता है, वही ऊँचे चोटियो वाले क्षेत्र में निवासरत 80 प्रतिशत नागरिक कृषक है जिन्हें स्थानीय भाषा में सर्फ कहा जाता है

19–वी सदी के प्रारंभ से ही जैसे–जैसे औद्योगिकीकरण बढ़ता गया, सेनायें मशीनीकृत होती गई वैसे वैसे ही पश्चिम एशिया ने समस्त विश्व को अपनी ओर आकर्षित किया।

ब्रिटिश प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल ने तो यहां तक कह दिया है कि ''समस्त विश्व का भविष्य तेल पर आधारित होने के कारण अब पश्चिम एशिया के हाथ में होगा'' पश्चिम एशिया को पांच समुद्रो का क्षेत्र भी कहा जाता हैः

1. काला सागर।
2. रूस सागर।
3. कैस्पियन सागर।
4. लाल सागर।
5. फारस की खाड़ी।

पश्चिम एशिया का सामरिक दृष्टि से भी अत्याधिक महत्व है, क्योंकि पश्चिम एशिया को विश्व का केंद्र बिन्दु भी कहा जाता है। पश्चिम एशिया से होकर ही एशिया, अफ्रीका, यूरोप, सुदूरपूर्व के स्थल और समुद्री मार्ग इसी क्षेत्र से होकर जाते है। यदि हवाई मार्ग का आंकलन किया जाए तो अमेरिका ,यूरोप,एशिया और अफ्रीका महाद्वीपो के वायुमार्गो का केन्द्र स्वेज नहर, सीरिया और ईराक के हवाई अड्डो से होकर जाता है। यही कारण है कि सिकंदर महान, नेपोलियन, कैसर विलियम द्वितीय एवं हिटलर ने भी अपने विश्व विजयी अभियानों को पूर्ण करने के लिए इन क्षेत्रो पर प्रभुत्व स्थापित किया। इससे यह स्पष्ट होता है कि जो भी शक्ति समस्त विश्व पर अपना प्रभुत्व स्थापित करना चाहती है उसके लिए पश्चिम एशिया पर प्रभुत्व स्थापित करना अनिवार्य हो जाता है।

द्वितीय विश्वयुद्व के समर तंत्र ने यह स्पष्ट कर दिया है कि चाहे सेनाओ को सुरक्षा व गति प्रदान करने वाले बख्तरबंद वाहन हो चाहे, मारक क्षमता प्रदान करने वाले टैंक हो या समुद्री गतिविधियां व सुरक्षा प्रदान करने वाले जलयान हो अथवा विजय के लिए सर्वाधिक अनिवार्य वायु प्रभुत्व स्थापित करने के लिए उपयोग में लाए जाने वाले वायुयान हो, सभी को संचालित करने वाली ऊर्जा खनिज तेल हो, यह सभी पश्चिम एशियाई तेल के कुएं में उपलब्ध है।

पश्चिम एशियाई राष्ट्रो में ईरान, ईराक, कुवैत, बहरीन, सउदी अरब, ओमान, सीरिया, ईजराइल और जोर्डन में प्रमुखतः तेल के कुएं है तथा इजराइल और लेबनान के बंदरगाहो तथा सीरिया के मरूस्थलो को पार करके ही कोई भी बाहरी राष्ट्र तेल प्राप्त कर सकता है और विशेष बात यह है कि अधिकतर पश्चिम एशियाई राष्ट्र तकनीकी और वैज्ञानिक रूप से इतने सक्षम नहीं है कि वे कच्चे तेल का खनन और उत्पादन कर तेल निर्यात करने की स्थिति में आ सके। परिणामस्वरूप अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, चीन और रूस पश्चिम एशिया में परस्पर शक्ति संघर्ष करते हुए तेल पर प्रभुत्व स्थापित करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। वर्तमान समय में तेल को राष्ट्रो का औद्योगिक व संसाधनो का रक्त भी कहा जाता है यही कारण है कि जनरल बेवेल ने घोषित किया था कि ''आगामी तृतीय विश्व युद्व पश्चिम एशिया में ही लड़ा जाऐगा, क्योंकि यही प्रदेश भौतिक संघर्ष का केन्द्र बिन्दु रहेगा और इसका आधार तेल के कुएं

और प्रमुख हवाई अड्डे रहेगे विशेषरूप से यही क्षेत्र अध्यात्मिक संघर्ष की रणस्थली भी रहेगा, क्योकि विश्व के तीनों प्रमुख धर्मावलंबी (ईसाई, मुस्लिम, यहुदी) इसी क्षेत्र में निवासरत है''।

निष्कर्ष

प्रथम विश्व युद्व के दौरान जिस प्रकार से कवचित सेनाओ ने अपनी गतिशीलता और मारक क्षमता का प्रदर्शन किया तथा द्वितीय विश्व युद्व के वायुयानो के सफल उपयोग से वायु प्रभुत्व का सिद्वांत प्रायोगिक रूप से प्रतिस्थापित हुआ वह महत्वपूर्ण था, और परिणामस्वरूप में द्वितीय विश्वयुद्व उपरांत दो ऐसी घटनाएं हुई जिन्होंने समस्त विश्व एवं पश्चिम एशिया की सामरिक एवं राजनैतिक स्थिति में अप्रत्याशित और निर्णायक मोड़ ला दिया वह था, इजराइल का गठन और लगभग समस्त पश्चिम एशियाई राष्ट्रो द्वारा तेल के निर्यात से प्राप्त होने वाली राशि को शस्त्रीकरण में लगा देना।

उपरोक्त परिस्थितियो का सर्वाधिक लाभ महाशक्तियो एवं शस्त्र निर्यातक राष्ट्रो द्वारा उठाया गया, फलस्वरूप एक अंतहीन शस्त्र भण्डारन की दौड़ प्रारंभ हो गई। समस्त विश्व के प्रशासको में सर्वाधिक दूरदर्शी राजनायिक ब्रिटिश प्रशासक सर आलफकेरो थे जिन्होंने तेल के कुँओं को शक्ति का कूप भण्डार नाम दिया।

यदि हम वर्तमान मे परिस्थिति का अवलोकन करे तो बेवेल का कथन तार्किक आधार पर सत्य प्रमाणित होता है क्योंकि द्वितीय विश्वयुद्व के उपरांत वर्तमान समय तक का विश्व सैन्य इतिहास यह प्रदर्शित करता है कि द्वितीय विश्वयुद्व के उपरांत चाहे 1980 से 1988 तक 8 वर्ष चला ईरान, ईराक युद्व, अरब ईजराइल युद्व, सीरिया लेबनान युद्व, खाड़ी युद्व, भारत चीन युद्व, भारत पाकिस्तान युद्व आदि सभी प्रमुख युद्व पश्चिम एशियाई क्षेत्र अथवा भौगोलिक निकटता वाले देशो में ही लड़े गए है।

संदर्भ सूची

1. Ahmad, Talmiz (2005) "Geopolitics of oil", Symposium on oil, November, htttp://www.Indiaseminar,com/2005/555.html, Accessed on 10/09/2024.
2. Amobrose Evan-Pritchard, 'Peak Cheap Oil is an Incontrovertible Fact', the Telegraph 26 August 2012
3. Fisher, W. B. (1961) *The middle east-a physical, social and regional geopragphy,* Luis Publication, London, p.36.
4. Hamd, Nezhad (2009) World energy Scenarios to 2050, Metropolitian State University, Minneapolis, MS, September 2009.
5. Keen, B.A. (1971) *The middle east,* Luis Publication, London, p. 131.
6. Kohl, Wilfrid (2004) National Security and Energy", Encylopedia of energy, Elsevier, CA Vol. 4 March.
7. Kottilil Narayanan (2012) Former Chariman DG, Hydrocarborns, Advisory Council Government of india, in a communication to the author dated 12 July 2012.
8. Lenchzowski, G. (1952) The middle east in world affairs, Oxford Press, Ithaca, New York, p. 17.
9. Pant, Girijesh (2002) India's Energy Security: The Gulf factor Gulf Studies Programme, Center for west Asian and African studies, Jawaharal Nehru university, New Delhi.
10. Water, Laquer (1975) The middle east and world politics, Luis Publication, London, p. 231.

——==00==——